P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-1* September- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वैश्वीकरण के दौर में महिलाएं : एक विवेचना

Women in Era of Globalisation: An Analysis

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 20/09/2020, Date of Publication: 21/09/2020

रेखा मेहरा
असि0 प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,हल्द्वानी, नैनीताल
उत्तराखण्ड, भारत

गीता तिवारी
असि0 प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री राज0 महाविद्यालय, हल्दूचौड़,
हल्द्वानी, नैनीताल,
उत्तराखण्ड, भारत

हेम चन्द्र
असि0 प्रोफेसर,
बी. एड. विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री राज0 महाविद्यालय,
हल्दूचौड़, हल्द्वानी, नैनीताल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र के अर्न्तगत भारत में वैश्वीकरण के उपरान्त महिलाओं की स्थितियों में आये परिवर्तनों को देखते हुए उनकी स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है। जहां एक ओर वैश्वीकरण ने महिलाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराके उन्हे आत्म निर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं दूसरी तरफ उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार के कारण महिलाओं की छवि को प्रभावित करने का कार्य भी किया। वैश्वीकरण के अर्न्तगत बीपीओ, कॉल सेन्टर आदि नए रोजगार बन कर उभरे है परन्तु इनमें रात की पाली में काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा प्रमुख प्रश्न है। साथ ही इन क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं को कार्यस्थल पर यौन शोषण, असमान व्यवहार व अन्य तरह के भेदभाव का भी अधिकाशतः सामना होता रहता हैं। वैश्वीकरण के इस युग में महिलाओं के वस्तुकरण एवं व्यावसायीकरण को भारतीय समाज पर पड़े इसके नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। इसके कारण विकसित देशों में महिलाएं निर्धनता एवं भेदभाव का शिकार हो रही है। जो एक विचारणीय प्रश्न है। अनेको कानूनों एवं विधियों के होने के बावजूद कई महिलाएं आज भी दोयम दर्जे का जीवन व्यतीत कर रहीं है।

After the globalization in India, an attempt has been made to understand the situation of women in view of the changes in their status. While globalization has played an important role in making women self-reliant by making employment more often available, on the other hand, due to the spread of consumerist culture, it also served to promote the image of women. BPOs, call centers etc. have emerged as new jobs under the direction of globalization, but the safety of women working in night shift is the main question? At the same time, women working in these areas are also increasingly facing sexual exploitation, unequal behavior and other forms of discrimination at the workplace. In the era of globalization, the objectification and commercialization of women can be seen as its negative impact on Indian society. Due to this, women have victims of poverty and discrimination in developed considerable question. Despite many laws and laws, many women are still living a low standard of life.

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, गुलाम वेतनभोगी, भूमंडलीय गांव, बहुराष्ट्रीय निगमों, विदेशी विनियोग, महिलाओं के वस्तुकरण एवं व्यावसायिकरण, गरीबी के "स्त्रीकरण"।

Globalization, Consumerist Culture, Salve Salaried, Global village, Multinational Corporations, Foreign Appropriation, Itemization and Professionalization of women, Feminization of Poverty.

प्रस्तावना

वैश्वीकरण को विश्वव्यापीकरण से सम्बद्ध किया जा जाता है। अर्थात् विश्व की प्रत्येक वस्तु और जीवन के प्रत्येक पहलू का विश्वस्तरीय विस्तार। इस तरह वैश्वीकरण की अवधारणा ने समस्त विश्व के लिए एक पुल का काम किया है, तथा वैश्विक ग्राम की संकल्पना को साकार किया है। क्योकि व्यक्तियों, वस्तुओं, सेवाओं और विचारों का विश्वव्यापी आदान प्रदान अत्यन्त प्राचीन काल से जारी है। हमारे देश की वस्तुएं लम्बे समय तक विश्व के विभिन्न देशों के बाजारों में आकर्षण का केन्द्र रहीं थीं। विश्व व्यापार में भारत की समृद्धि ने भारत को सोने की चिड़िया के रूप में स्थापित किया। विज्ञान और तकनीकी का जो विकसित रूप आज है, वह प्राचीन समय में केवल कल्पना की वस्तु था। विज्ञान और तकनीकी के महत्वपूर्ण विकास ने परिवर्तन और प्रवाह को अत्यन्त

तीव्र कर दिया। व्यक्तियों, वस्तुओं, सेवाओं और विचारों का विश्वव्यापी प्रवाह आज विज्ञान के कारण इतना तीव्रतम है कि किसी भी रूप में यह प्राचीनकाल से तुलनीय नहीं है।

राजनीतिक वैश्वीकरण के अंतर्गत राजनीतिक शक्ति, सत्ता और शासन के स्वरुप में हो रहे बदलावों को समझा जा सकता है। इस प्रक्रिया में विश्व के एक हिस्से में लिए गए निर्णयों का प्रभाव संचार के तीव्र साधनों से विश्व के अन्य भागों के शासन तंत्रो, निर्णय निर्माण व राजनीतिक क्रियाकलापों पर पड़ता है। राष्ट्रीय राज्यों के सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व पर्यावरणीय मुद्दों पर वैश्वीकरण के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। हालांकि वैश्वीकरण ने विविध क्षेत्रों को प्रभावित किया है। भारत में 1991 से जो नई औद्योगिक नीति आई उससे निजीकरण, उदारीकरण व वैश्वीकरण की प्रक्रिया पर बहुत प्रभाव पड़ा है। उसने महिलाओं के जीवन को भी कई तरह से प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के शिकार विकासोन्मुख देश ज्यादा है। जो ऋण के बोझ तले दबे हैं। वैश्वीकरण से महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन नहीं दिया जा रहा। भूमंडलीकरण ने जहां भारत में कुछ प्रतिशत महिलाओं को फायदा पहुंचाने का काम किया उससे अधिक प्रतिशत महिलाओं को विश्व व्यापार संगठन की अनेकों शर्तों ने उनकी अपनी परंपरागत ग्रामीण रोजगार के साधनों को छीनने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक असमानता व असुरक्षा के माहौल में जीवन यापन करने वाली भारतीय महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ा है देश में कृषि क्षेत्र में अधिकांश योगदान यहां की ग्रामीण महिलाओं का है, यहां अधिकांश कृषि कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते रहे हैं, कृषि से संबंधित महिलाओं का ज्ञान व कुशलता जैसे – बीजों की सुरक्षा के उपाय, खाद्य उत्पादन व सुरक्षा, फसलों की विविधता आदि के काम में आती थी।

साहित्यावलोकन

प्रियका कुमारी, (July-Dec 2016) वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव के साथ साथ नकारात्मक प्रभाव भी भारतीय महिलाओं पर पड़ा है। उनका सामजिक व सांस्कृतिक जीवन भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहा है, जिसमें मुख्य रूप से आधुनिक मीडिया, टी.वी. और वीडियों प्रमुख है, जो कि वैश्वीकरण का शक्तिशाली वाहक है। अपने सौन्दर्य और घर के दायरे में कैद स्त्री वैश्वीकरण के लिए सर्वाधिक सुविधाजनक है। वैश्वीकरण पहले सौन्दर्य प्रतियोगिताओं और फैशन जगत के माध्यम से सौन्दर्य की प्रतिमूर्तियॉ गढ़ता है और फिर उन्हें भांति भांति से उपभोक्ताओं को परोस कर अपना माल बेचता है। जिसमें महिलाओं के परिपेक्ष्य को दूसरे या भोग विलासी तौर पर प्रस्तुत किया जाता है। जिससे समाज में महिलाओं की छवि को नकारात्मकता दी जा रही है।

बी.एल. फड़िया एवं कुलदीप फड़िया, (2019) संयुक्त राष्ट् के 193 देशों में से यह भूमण्डलीकरण कोई दो ढ़ाई देशों को छोड़कर बाकी सबको निर्धन से निर्धनतम बनाता जा रहा हैं आज से 40 वर्ष पहले विश्व के समृद्धतम 20 देशों की प्रति व्यक्ति आय विश्व के विपन्नतम 20 देशों की आमदनी से 20 गुना ज्यादा थी। अन्तराष्ट्रीय सहयोग, आर्थिक तकनीकी और वित्तीय सहायता के चार दशकों के बाद इन विपन्नतम देशों की प्रति व्यक्ति आय 37 गुना कम हो गई है।

विकास सिंह, (7 अगस्त 2020) वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए कम भुगतान, अंशकालिक और शोषणकारी नौकरियों की संख्या में वृद्धि की है। खुली अर्थव्यवस्था के कारण बढ़ी हुई कीमतें महिलाओं के बदलावों का अधिक सामना करती है। जनसंख्या के स्त्रीकरण ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों में पुरूष प्रवासन ने महिलाओं को ग्रामीण क्षेत्र में घर बनाने, खेती और नौकरी के ट्रिपल बोझ के तहत रखा है। इसी समय आर्थिक कारणों से महिलाओं के प्रवासन ने यौन शोषण और तस्करी सहित शोषण को बढ़ा दिया है। वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण ने महिलाओं को घर से बाहर नौकरी करने, सामाजिक गतिशीलता के कई अवसर भी उपलबध करायें हैं।

ऋतु सारस्वत, (28 अगस्त 2020) भारत के संतुलित विकास के लिए जरूरी हैकि सामाजिक शब्दकोष से महिला की घरेलू जिम्मेदारी जैसे शब्द हटा दिये जाएं। भारत के प्रधानमंत्री से यह भी गुहार लगाई गई है कि अगली जनगणना में गृहिणियों की गिनती गैर कामकाजी या गैर श्रमिक की श्रेणी में न की जाएं। यह समस्त दायित्व साझाा करने का दौर है। ऐसा नहीं हुआ, तो महिलाएं विवाह संस्था से कतराने लगेगीं।

विवेचना

वर्तमान समय में यातायात एवं संचार के क्षेत्र में जो क्रांति हुई है। आज उसके कारण विश्व अर्थव्यवस्था तेजी से भूमंडलीकरण की ओर बढ़ रही है। 19वीं सदी को वैश्वीकरण का प्रारंभिक काल माना जाता है। इसने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं के महत्व को कम कर दिया है। विश्वव्यापीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है और व्यापार देश की सीमाओं में प्रतिबंधित ना रहकर विश्व व्यापार में निहित तुलनात्मक लाभ दशाओं का विदोहन करने की दिशा में अग्रसर होता है।

यह एकरूपता व समानता की वह प्रक्रिया है जिसमें सारा विश्व सीमित होकर एक हो जाता है। वैश्वीकरण के अंतर्गत पूरी दुनिया एक भूमंडलीय गांव (Global Village) की अवधारणा को साकार करती है। यह राष्ट्रों की राजनीतिक सीमाओं के आर–पार आर्थिक लेन–देन की प्रक्रिया और उनके प्रबंधन का प्रवाह है, विश्व अर्थव्यवस्था में आया खुलापन आपसी जुड़ाव और परस्पर निर्भरता के फैलाव को वैश्वीकरण कहा जाता है।

"संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी रिपोर्ट सितंबर 2000 में स्पष्ट कहा है कि वैश्वीकरण के प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं शुरू हो गई है, क्योंकि इसके लाभ असमान रूप से वितरित है। वैश्विक बाजार को अभी तक सहभागी सामाजिक लक्ष्य पर आधारित नियमों के अधीन नहीं किया गया है।"

लेकिन विश्व व्यापार संगठन के समझौते के तहत कृषि पर व्यापारिक जगत का दबदबा बढ़ गया है।

जो खाद्य सुरक्षा के कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते थे, वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप अब यह कार्य ग्लोबल कंपनियों के हाथों में चला गया है। इसका कृषि के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव हुआ है। इन क्षेत्रों में रोजगार सृजन की दर बहुत कम हैं, और लगातार गिर रहीं है। हमारी जनसंख्या दर बढ़ी है, पर रोजगार दर घटी है। महिलाओं की मजदूरी कम हुई हैं। पुरूषों और महिलाओं की मजदूरी के बीच का अंतर बढ़ गया, हांलाकि पुरूषों और महिलाओं दोनो की मजदूरी में कमी आयी है। लेकिन महिलाओं की मजदूरी में अधिक कमी आई है। वैश्वीकरण ने निजी व असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को अनेकों अवसर प्रदान किये हैं, जो महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थी, उन्हें इसके कारण अनेकों इकाइयों में कार्य करने का अवसर मिला। लेकिन इस प्रक्रिया ने उनसे उनके काम के बुनियादी अधिकार को छीन लिया। आज कई विदेशी कंपनियों ने अपने निर्यात उद्योगों जैसे कपड़ा, फूड प्रोसेसिंग एवं बिजली के उपकरण, खेल का सामान आदि की इकाईयां खोलकर महिलाओं को सस्ता श्रम मानते हुए कम वेतन पर अधिक से अधिक काम पर रखा।

इन स्थितियों ने महिलाओं को "गुलाम वेतनभोगी" बनाने का कार्य किया। वैश्वीकरण ने गरीबी के "स्त्रीकरण" को अधिक प्रोत्साहित किया है। एक अनुमान के मुताबिक विश्व के कुल काम के घंटों में से महिलाएं दो तिहाई घंटे काम करती हैं। और केवल विश्व की दस तिहाई आय अर्जित करती है, और केवल 1 प्रतिशत संपत्ति की मालिकन हैं।

वैश्वीकरण के कारण बढ़ते मशीनीकरण से नौकरियों में कमी, राष्ट्रों के सांस्कृतिक आदान–प्रदान, संचार माध्यमों के विस्तार और विश्व स्तरीय संस्थाओं के भारत में आने से महिलाओं को समान अवसर और अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने का काम किया। गैर सरकारी संगठनों के आने से महिलाओं को साक्षरता और व्यवसायिक प्रशिक्षण का भी लाभ मिला है। वैश्वीकरण ने विकास तो किया किंतु उसके लाभों के असमान वितरण से आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिला है ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में हर वर्ष डेढ़ करोड़ लड़कियां जन्म लेती है। जिनमें से 25 लाख लड़कियां 15 वर्ष की उम्र से पहले ही मर जाती है। इन लड़कियों की मृत्यु का एक प्रमुख कारण समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव का व्यवहार है। वैश्वीकरण ने विदेशी विनियोग में वृद्धि तो की पर रोजगार में वृद्धि नहीं हो पाई। जैसे– 1991–92 में महिलाओं की बेरोजगारी 3.1 प्रतिशत थी जो 1994–95 में बढ़कर 5.5 प्रतिशत हो गई थी जो निरंतर चल रही है। भारत में लगभग कुल श्रमिकों का 31 प्रतिशत महिला श्रमिक हैं जिसमें से 95–96 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में काम करती हैं। इन क्षेत्रों में न तो अच्छा वेतन है, न काम के निश्चित घण्टे, न कोई जॉब सिक्यूरिटी और न ही सामाजिक सुरक्षा। इन क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं के शोषण की संभावनाएँ बहुत अधिक होती हैं। प्रतिस्पर्धा के इस युग में नौकरी को बचाए रखने के लिए महिलाएँ अक्सर देर तक और अपनी क्षमता से ज्यादा काम करती हैं। इन क्षेत्रों में 12–12 घण्टे काम लेना सामान्य माना जाने लगा है। प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न तनाव, मानसिक व शारीरिक थकान, काम के लंबे घण्टे स्वास्थ्य के लिये घातक हैं और कई मनोविकारों को जन्म देते हैं।

महिलाओं के घरेलू कार्यों को कार्य की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। उनके काम को कार्य की संज्ञा तब दी जाती है, जब वह बाहर जाकर कुछ काम करती हैं, और उसके बदले में धन लेकर आती है। भारत में वैश्वीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति, साइबर क्राइम व घरेलू हिंसा आदि ने भी वैश्वीकरण के बाद भारतीय महिलाओं के जीवन को बहुत अधिक हानि पहुंचाई है। आज भी विकसित देशों में प्रवासियों के प्रति नकारात्मक रवैया वहां के मूल निवासियों की राजनीतिक और सामाजिक सोच में गहरे से बैठ गई है कि प्रवासी वहां के मूल निवासियों के राजनीतिक वर्चस्व मे सेंध लगा देंगे या फिर सामाजिक और सांस्कृतिक एकता पर हमला कर देंगे। इस तरह की मानसिकता वहां के मूल निवासियों को नस्लभेद जैसी हिंसक घटनाओं को अंजाम देने की ओर अग्रसर करती हैं। तथा नस्लवाद की राजनीति को बढ़ावा देती है। वैश्वीकरण के प्रसार के साथ ही साथ विश्व के कई क्षेत्रों में प्रवासियों के साथ नस्लीय हिंसा की घटनाएं बढ़ी है ।

निष्कर्ष

भूमंडलीकरण से राष्ट्रीय निगमों को खुली छूट मिल गई है, और बहुराष्ट्रीय निगम निर्धन राष्ट्रों पर धनी राष्ट्रों के उपनिवेशन नियंत्रण के वाहक हैं। यदि राजनीतिक दृष्टि से देखें तो विश्व व्यापार में भागीदारी बढ़ाने का मतलब अमीर देशों पर निर्भरता बढ़ाना है, या आश्रित होना है। और जो राज्यों की राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक हितों पर भी निरंतर अपना प्रभाव स्थापित करते रहते हैं। वैश्वीकरण की तमाम बुराइयों के बीच महिलाओं के लिए कुछ अच्छी बातें भी सामने आयी हैं पहले के मुकाबले उनको रोजगार के लिए उन क्षेत्रों में भी अवसर मिल रहे है जहां उनका प्रवेश वर्जित माना जाता था। इसके साथ ही समाज में आज इस बात की सहमति भी बन रहीं है कि महिलाएं घर से बाहर जाकर काम कर सकें। कामकाजी महिलाएं अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रहीं है, उनका रहन सहन जीवन शैली आदि भी बदल रहीं है। वे आत्म विश्वासी और आत्म निर्भर एवं अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कुमारी, प्रियंका, "वैश्वीकरण के दौर मे महिला सशक्तिकरण" : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, Journal of socio-Educational & Cultural Research, Vol.2, No.5, July-Dec 2016, ISSN-2394-2878, पृ.सं. 158.*
2. *फड़िया, बी.एल. एवं फड़िया, कुलदीप, ISBN-978-93-5173-255-6, "अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध के सिद्धान्त", साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ.सं. 241.*
3. *सिंह, विकास, "वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव", 7 अगस्त 2020, www.theindianwire.com*

4. *सारस्वत, ऋतु, "लैगिंक भेद से परे सभी घरेलू जिम्मेदारियां हो साझा" , नजरिया, हिन्दुस्तान समाचार पत्र, नैनीताल, 28 अगस्त 2020, पृ. सं. 10*
5. *सिंह, एस0 के0, 2003 "व्यावसायिक पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा पृ0सं0 152.*
6. *सिन्हा, बी0सी0, "व्यावसायिक पर्यावरण" एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा पृ0सं0 295.*
7. *फड़िया, बी0एल0, 2013 "अंतरराष्ट्रीय राजनीति" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ0सं0 355–57.*
8. *शर्मा, स्वाति, "वैश्वीकरण के दौर में महिलाएं", हम समवेत डॉट ओआरजी डॉट इन 7 सितंबर 2009.*
9. *विमर्श विद्यार्थी ब्लॉक ''अभिव्यक्ति का एक अभिनव मंच" 10 जुलाई 2013 ए एन टी ब्लॉग. ब्लॉगसपॉट. कॉम.*
10. *जौहरी, जे.सी. एवं शर्मा, रश्मि, 2020 ''राजनीति विज्ञान'', एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स आगरा, पृ0सं0 191–199.*